

50872-50876

208

50872 - (विज्ञान भैरव)

50873 - (ज्ञान सार)

50874 - (तन्त्र सार)

50875 - (कील सुभाषित)

Acc. No. 50872

50876 - (पाश्चात्तर कला)

ज्ञान भैरव त्रीविजानीपत्र ।

ॐ श्री ग० प० उ० ये० न० ॥ ॐ न० मे० द० रि० द० ग० कु० भा० ॥ ॐ ग० झ० प०
 सै० व० भ० दी० प० रं० म० ॥ पि० रं० क० पा० लिं० म० म० ड० ड० एं० म० ॥ प० छ० रं० भै० भृ० व०
 रं० म० ॥ न० डं० म० वि० डं० म० भ० द० र० भा० मि० ॥ ० ॥ उ० भा० प० रं० मू० प० रं० भ० ड० भं० म० प०
 ० भृ० रं० म० म० रि० व० मि० रं० म० ॥ अ० म० रं० व० भं० ए० ल० म० यि० रं० म० न० डं० म० वि० डं०
 म० भ० द० र० भा० मि० ॥ ३ ॥ दि० पु० ल० ण० गी० ग० म० प० रिं० म० ए० ए० प० रं० म० व० कि०
 गी० टि० रं० म० ॥ पि० ड० ड० लं० प० ड० ए० लं० म० रं० म० ॥ न० डं० म० ॥ ४ ॥ प० ड० ड० प० लिं०
 म० भ० म० म० ड० पा० लिं० म० भ० भ० भ० लं० व० र० भां० लिं० रं० म० ॥ भ० ठे० रं० वं० वं० भ० न० ड०
 प० य० डं० ॥ न० डं० म० ॥ ५ ॥ लि० ड० मि० उं० मे० व० ग० ॥ मि० उं० म० म० म० मि० उं० म०

[illegible]

ਭਤਿਸ਼ੀਦਗਿਯਗਪੁਕੰਮਮਾਪੁਮਿਤਿਸਿਵੰਗੋਠੀਤਤਮਾਮਾ

श्रीः

श्रीभक्तिभक्तवत्तिके॥॥॥कमररिचउलयकभममदिरवम
पष्टवद्रवकलनपमद्रिगुल्णउकभममयमपठठलिठम
व॥॥मलमलप्रलवदमउअप्रिवमउवदकलेउ॥मल्लउमि
मीउ०गाउ॥अउअउपमिमयवलेउ॥प्रवेरद्रिगुल्मउमम॥॥
मम॥॥पम॥॥पमिपवदष॥॥मम॥॥मम॥॥मम॥॥
मम॥॥पलये॥॥ममिमेग॥॥पदलिमपुत्रपमषकिमद्रुगामी
वभक्तवाएविपए॥॥वेलिअदरिदकषषकैउ॥कमद्रुगामी॥॥
उउपमपिकेमउअउउविमउिरालिकमद्रुकलीमदम॥॥

३१

देभमणपपडूउपरस्रकिउकिर्योगभयभाष्टम॥ कुलक ॥ ॥
कमगदगभजेवडुमहिवाभउः॥ प्रवदद्वैकलरपुप
स्रप्रमगठितः॥ हृष्टीपरिभेरदमयभददद्वैवडा॥ भ
चइभजेठदल्लुमुडयपरिडिमंष्टितः॥ मउंमउंवदमुंमंगः
मउंवदःभउः॥ उभिन्नपुदलेपद्वेपुत्तपइमुत्रलतः॥ उद्वैयं
मउंवपचउपिडकठस्रउ॥ तिमडीमुमपडिउमेवप्रडि
दल्लव॥ दकगवकुडिःप्राभापरमुभकगवडा॥ यद्वकग
मुगेदल्लस्रवल्लेकःप्रदउठपिः॥ स्रउल्ललगउभइ

श्री.
ॐ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

श्री-
३७

取

[illegible]

ॐ क्लृप्तिरुक्तांशुः ॥ १७० ॥ भो वं वं मे सुभयता ॥
रं धं सुभे उभे उरु उरु पश्चिमाभिभापिलिङ्गभाः कुलपद्म
व ॥ १७१ ॥ एतद्गणकम् क्लृप्तिरुक्तांशुः ॥ १७२ ॥ इति लिङ्ग
निकरं ॥ १७३ ॥ भुवि मंदरयै रते रते उता ॥ १७४ ॥ उमये म
रु सुगम रुमे वीरं मेला पाङ्के वृत्तं रुवे, सुभयमी पन उद्भव
ता ॥ १७५ ॥ भुवा वतेः पद्म सुपमवे, रतेः पतये रभते ॥ १७६ ॥ सुत
पुण्या सुयं रुते भाग कतमं वितीये रुते रुते रुते सुधा ॥ १७७ ॥ श्री
लयति मतम् : भुवि मे वी पुरुतयः ॥ १७८ ॥ इति लिङ्गः

श्रीः

पतिमत्तः श्रद्धममदले ॥ ३५ ॥ मरुठयमदरे पक्रुभिकयैरण
उद्वेष्टक इति विम्वः ॥ ३६ ॥ मृदुद्रगवममं कं मभुदुमं भ्येजाग ॥ ३७ ॥
भुवगभुएणमएणमभुभुवरेकुउपरि लभः ॥ ३८ ॥ १० यैरुगलेभद
मंमपाद ॥ ३९ ॥ पकविंसतिमादमृभ्यधुदुदंभादरणपःम
विंसतिगलिकमहृयप्रमिगे ॥ दिवविमभविमपे विपिल
पुलिगभा ॥ ४० ॥ कुलमरेपयेगिभदएंतदिगुचंभुनंभुदु ॥ ४१ ॥
एभुदुपुभुतंकाउभादुभापिः ॥ ४२ ॥ मरेमीपुदुनतेविमभमउ
उभामिदगदिः ॥ ४३ ॥ उचपेसुदुएगलिकपुदुयमउनरेवल्लि

श्रीः

उजउठगभुठगाउजउलिङ्ग ॥ माउभंभममयीधेभकुपपि ॥ ५८ ॥
त्रिपदु ॥ पापभम ॥ ५९ ॥ गीरकमवद्विष्टम ॥ ६० ॥ कन ॥ ६१ ॥
नयाइप्र ॥ ६२ ॥ उउउउभ ॥ ६३ ॥ लिपा ॥ ६४ ॥ यशी ॥ ६५ ॥ उउ ॥ ६६ ॥
गव ॥ ६७ ॥ उउ ॥ ६८ ॥ कन ॥ ६९ ॥ मम ॥ ७० ॥ उउ ॥ ७१ ॥
इ ॥ ७२ ॥ वभा ॥ ७३ ॥ उउ ॥ ७४ ॥ पा ॥ ७५ ॥ पापभम ॥ ७६ ॥
भदल ॥ ७७ ॥ उउ ॥ ७८ ॥ उउ ॥ ७९ ॥ उउ ॥ ८० ॥
विमग ॥ ८१ ॥ चक ॥ ८२ ॥ उउ ॥ ८३ ॥ उउ ॥ ८४ ॥
पा ॥ ८५ ॥ उउ ॥ ८६ ॥ उउ ॥ ८७ ॥ उउ ॥ ८८ ॥

लं म म गी र मे उ न रि धू न म ॥ ५१ ॥ ठ व रु उ म म् म म भ उ नि म् रु ठ व ड प
 द व म न म ॥ ५२ ॥ भ वे धं क भ यं ठ ल रं के ग रं वि रं य रं वि म् रु ती नं प
 रु धू उ रः प रः क मः ॥ ५३ ॥ ठ लं के गी वि रं य वि म् रु ति र डै व पू ट डि ए उ न ट
 रु वे ल उ म म ॥ ५४ ॥ नि ट मे व र ग् म मि म उ धू ये पृ वि ङ्गि त्र भा इ प्र ण
 न म ॥ ५५ ॥ रु भ्रा पा व रु म भ म् म पिल म द न म् म वि म् ट म् म लं न
 कि ङ्गि म् पृ दं रु व वि ध यः ॥ ५६ ॥ प उ उ ड् म ठ के र प वे क व भु वी क
 व ॥ ५७ ॥ ध प्रः प र ले क भ म् म रु रः ॥ ५८ ॥ वि ग ल डि दि म् प उ म् व ण म्
 नं उा दि न मे वं य जि मि दिः ॥ ५९ ॥ क लि क व क मे ठ य म् म् क रु म् म द

मौलाना

भाभरभुभा॥५३॥रिपाकहवदगदिगलिउभायभणैरसंकि
त्रपासंविकभतिभुउभा॥५३॥सुवषादितएलद्वभद्वियनीह
वाति॥५॥पाभगैजेपाभकभाणकनिहभयसंभदेवदभा॥भा
दभायंगलभगम्भीकुउगंवभनितउगद्वदिगद्वउभाभभा॥
५३॥उतिकैलअहदि॥भभाभुति॥५॥॥

